पटियाला घराना और गुरू–शिष्य परम्परा

डॉ॰ अमिता पाण्डे
विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग, ए.पी.जे. कालेज ऑफ फाईन आर्टस्, जालंधर

संगीत माव हृदय में तरंगित ललित भावनाओं की सुचारू, आकर्षक, एवं प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति कला पूर्ण तभी होती है जब उसमें कोई परम्परा, कोइ्र रीति हो अथवा कोई शैली हों परम्परागत भारतीय संगीत का इतिहास सांगीतिक शैलियों का इतिहास है परम्परागत संगीत का अर्थ ही है परम्परा से सम्बन्धित संगीत अथवा यह संगीत जिस पर संगीत की छाप पड़ी है। परम्परा से ही संगीत समृद्ध होता है। परम्परा के अन्तर्गत सर्वप्रथम काल विशेष में संगीत पद्धति जैसे ध्रुवपद–धमार खयाल, गतकारी आदि आती है यह सांगीतिक शैलियों की परम्परा कहलाती है। इन शैलियों के अन्तर्गत जो गायकी और वादन शैली गुरू से शिष्य और शिष्य से प्रशिष्य को प्राप्त होती है, वह उस घराने की परम्परागत शैली कहलाती है। अनेक वर्षों की परम्परा उच्चकोटि के गुरू और कई पीढ़ियों की गुरू–शिष्य परम्परा से मिल कर ही घराना बनता है। परम्परा चाहे किसी सांगीतिक शैली की हो या गुरू–शिष्य की, इसी से शास्त्रीय संगीत की मर्यादा बनी है तथा इसी परम्परा द्वारा ही हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विश्व का सर्वोत्तम संगीत कहलाता है।

वास्वत में ध्रुवपद की बानियों की वृद्धावस्था और खयाल गायन के बाल्यावस्था के काल से घराना शब्द काप्रयोग पाया जाता है। यह काल लगभग दौ सौ वर्ष से कम का नहीं है। खयाल गायन के अर्न्तगत सम्प्रदाय, मत, बानी आदि शब्दों का प्रयोग ना कर 'घराना' शब्द का प्रयोग प्रचलन में हो गया। इसका कारण यह भी रहा होगा कि उन शब्दों में प्राचीनता की महक आती है। खयाल की आरम्भ उस काल में हुआ, जब भारत में छोटी बड़ी रियासतें थी, बादशाहों, राजाओं, महाराजाओं का राज्य था। उनके वंश, क्रम से राज्य करते थे उनके घराने के लोग राज घराने के नाम से सम्बद्ध थे। उस समय संगीत राजाओं, महाराजाओं के आश्रय में था। इसीलिये उस काल के संगीत प्रथा के साथ घराना ही उपयुक्त शब्द था और इस शब्द से तत्कालीन आधुनिकता या नवीनता प्रकट होती रही होगी, अतः घराना शब्द प्रचलन में आ गया जो प्रायः सर्वमान्य हो गया। संगीत में घराना शब्द का प्रयोग प्रायः खयाल शैली के अर्न्तगत होता है।

जब एक ही गायन अर्थात् खयाल गायन पद्धति के विभिन्न गायक अलग–अलग अपनी शैलियां बनाते हैं, तब विभिन्न घरानों का जन्म होता है गायको की विविधता से विभिन्न घराने उत्पन्न होते हैं। घराने की किसी शैली में उस घराने के प्रवर्तक की विशेष अभिव्यक्ति प्रकट होती है, जिसके द्वारा उस घराने की पहचान होती है। यह शैली या रीति, जिस कलाकार के द्वारा परिवर्तित होती है, वही उसका संस्थापक माना जाता है, और उसी के नाम से अथवा निवास स्थान से घराने का नामकरण होता है।

मुगल काल के अन्त होने पर संगीतज्ञों का निवास स्थान दिल्ली नहीं रह गया था। हिन्दुस्तान कई छोटे–छोटे राज्यों और जागीरों में बंट गया। संगीतज्ञों ने भी विभिन्न संगीत प्रिय राजाओं, महाराजाओं, बादशाहों और जागीरदारों के यहां शरण ली। इसी के साथ स्थान और कलाकारों के नाम पर घरानों का विकास हुआ। ख्याल एक तो सर्वाधिक लोकप्रिय शैली रही दूसरी इस शैली में संगीतज्ञों की अपनी कल्पना को अपनी योग्यतानुसार सीमा में रह कर साकार बनाकर प्रदर्शित करने का पूर्ण रूप से स्वतन्त्र अधिकार है। अपनी–अपनी शैलियों से प्रभावित कर शिष्य प्रशिष्यों द्वारा कई गायक खयाल गायकी के घराने के प्रवर्तक बने।

ख्याल गायन के अन्तर्गत विभिन्न घराने जैसे ग्वालियर घराना, आगरा घराना, किराना घराना, रामपुर घराना, दिल्ली घराना, सहसबान घराना, बनारस घराना, जयपुर दरबार का घराना, अतरौली घराना, इन्दौर घराना, मेवाती घराना और पटियाला घराना अपना प्रमुख स्थान रखते हैं।

पटियाला के महाराजाओं की वंशावली और उनके दरबारी संगीतज्ञ

पटियाला के राजघरांने के संरक्षण के कारण हिन्दुस्तानी संगीत में पटियाला घराने का महत्वपूर्ण स्थान है। पटियाला के इन महाराजाओं के नाम उल्लेखनीय है। 1. बाबाआला सिंह, 2. महाराजा अमर सिंह, 3. महाराजा साहिब सिंह, 4. महाराजा करम सिंह 5. महाराजा नरेन्द्र सिंह, 6. महाराजा महेन्द्र सिंह 7. महाराजा राजेन्द्र सिंह 8. महाराजा भूपेन्द्र सिंह 9. महाराजा यादवेन्द्र सिंह 10 महाराजा अमरेन्द्र सिंह।

बाबा अला सिंह, महाराजा अमर सिंह और महाराजा साहिब सिंह, उनके काल में रागाधारित कीर्तन संगीत का बहुत प्रचार हुआ। सिक्ख रागियों को राग, स्वर एवं ताल की शिक्षा उपलब्ध कराने के लिय शासनकाल विशेष सचेष्ट रहते थे और प्रतिभावान

कीर्तनकारों को गुणी कलाकारों के पास राग–सुंगीत का ज्ञान प्राप्त करने के लिये भेजा करते थे।

महाराजा करम सिंह ने संगीत जगत् में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने सभी गुरूद्वारों में रागियों और रबाबियों को मासिक वेतन देने की प्रथा प्रारम्भ की। इनके दरबार में मियां दित्ते खां साहब दरबारी संगीतज्ञ थे, जो शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत दोनों में निपुण थे। वास्तव में इन्हीं से पटियाला के शास्त्रीय संगीत और उसके घराने की नींव पड़ी। इनके पश्चात् इनके सुपुत्र उस्ताद कालू खां तथा उनके वंशज और शिष्य–प्रशिष्यों ने इस घराने का विकास किया। महराजा नरेन्द्र सिंह साहित्य और संगीत के बहुत प्रेमी थी। गुरुद्वारों में शब्द–कीर्तन और दरबार में शास्त्रीय गायन–वादन के स्वर गुजंरित होते रहते थे।

उनकी गुण–ग्राहकता की प्रंशसा सुन कर दिल्ली दरबार के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक उस्ताद तानरस खां पटियाला पधारे। इन विभूतियों ने कुछ काल रजाकीय अतिथि के रूप में यहां निवासकिया और राज दरबार में कला प्रदर्शन भी किया। महाराजा नरेन्द्र सिंह के स्वर्गवास के पश्चात् इनके पुत्र महेन्द्र सिंह महाराजा बने। इन्होने तत्तकालीन संगीत कलाकारों को बहुत प्रोत्साहन प्रदान किया।

महेन्द्र सिंह की मृत्यु के पश्चात केवल चार वर्ष की आयु में उनके पुत्र राजेन्द्र सिंह को पटियाला नरेश नियुक्त किया गया। राज का सारा प्रबन्ध कौंसिल आफ रिजैन्सी द्वारा देखा जाता था। 1890 में आपने अपना कार्यभार संभाला। इनके दरबार में सारंगी वादक तथा गायक मियां कालू साहब को दरबारी संगीतज्ञ नियुक्त किया गया । जयपुर के प्रसिद्ध ध्रुवपर गायक बहराम खां भी महाराजा के दरबार में पधारे।

भूपेन्द्र सिंह पटियाला नरेश संगीत के बड़े प्रेमी थे। इनके दरबार में अनेक प्रसिद्ध दरबारी गायकों ने पटियाला घराने की शोभा बढ़ाई। आपके दरबार में महन्त गज्जा सिंह नियुक्त थे, जो सुप्रसिद्ध कीर्तनकार और 'ताऊस' बादक भी थे। कहा जाता हे कि ताऊस के आकार प्रकार में नवीनता लाकर दिलरुबा नामक वाद्य का निर्माण महन्त गज्जा सिंह ने ही किया। भाई बूबा सिंह जो शब्द कीर्तन और रबाबी घराने घराने से सम्बन्धित थे वे भी महाराजा भूपेन्द्र सिंह के दरबार में संगीतज्ञ थें सारंगी वादब मिया मम्मन खां और कालू खां के पुत्र अली बख्श जरनैल जैसे दरबारी संगीतज्ञों ने पटियाला घराने की कीर्ति समस्त भारत में फैलायी। अली बख़्श के साथ ही फ़तेह अली 'करनैल'

भी महान गायक हुए, जिनकी जोड़ी को 'आलिया फत्तू' के नाम से भी जाना जाता है। सितार–वादक उस्ताद बरकत उल्ला, विचित्र वीणा के अविश्कारक उ. अब्दुल अज़ीज खां, पं. दिलीपचन्द्र वेदी को भी इस दरबार का गायक कलाकार होने का गौरव प्राप्त हुआ। महाराजा भूपेन्द्र सिंह द्वारा संगीतज्ञों को सम्मान आश्रय और संरक्षण प्रदान किये जाने के कारण ही पटियाला घराने के कलाकारों का नाम भारत के कोने–कोने में गूंज उठा।

महाराजा यादवेन्द्र सिंह के दरबार में उस्ताद–अमानत अली, फतेह अली के पिता उस्ताद अख़्तार हुसैन खां इनके दरबार की शोभा थे। भाई गोपाल सिंह पखावजी का नाम भी उल्लेखनीय है। इनके चाचा कुंवर मृगेन्द सिंह रूद्र वीणा और सितार बजाने में निणुण थे। महाराजा यादवेन्द्र सिंह के निर्देश में एक 'रायूल आकेस्ट्रा' नियुक्त किया गया, उस ऑकेस्ट्रा में उ. अब्दुल अज़ीज़ खां (विचित्र वीणा और सारंगी वादक) पं गिरधारी लाल, भाई मूलखा और अन्य संगीतज्ञ भाग लेते थे।

पटियाला घरने के अंतिम महाराजा अमरेन्द्र सिंह ने भी हिन्दुस्तानी संगीत के लिए पंजाब के मुख्य मंत्री रहते हुए बहुत सराहनीय योगदान दिया। पटियाला अमृतसर और कपूरथला के प्राचीन महलों में (हैरीटेज) नाम से संगीत की विशाल सभाओं का आयोजन किया जिसमे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के घरानों में संबंधित कलाकारों को आमंत्रित किया। सन् 2005 में कपूरथला में आयोजित एंक भव्य समारोह में पंजाब के उभरते हुए नवोदित कलाकारों को सम्मानित किया जिसमें सुगंधा मिश्रा और संतूर वादिका गुरपिंदर कौर को एक–एक लाख रूए देकर सम्मानित किया। अस्तु पटियाला के महाराजाओं की वंशावली और उनके दरबारी संगीतज्ञों ने हिन्दुस्तानी संगीत को एक नया आयाम दिया और पटियाला घराने की स्थापना करके संगीत जगत को विश्व में और प्रसिद्धी दिलवाई।

पटियाला घराने के ख़ानदानी संगीतज्ञ

ख़ानदानी संगीतज्ञ और घरानेदार संगीतज्ञ में अन्तर है। घरानेदार संगीतज्ञ किसी घराने का शिष्य होता है, उसके खानदान में आवश्यक नहीं है कि कोई अन्य भी संगीतज्ञ हो। ख़ानदानी संगीतज्ञ के परिवार में कई पीढ़ियों से गायन–वादन चला आ रहा होता है तथा इनसे घराने की समृद्धि होती है या खानदानी गायक–वादक स्वयं में एक घराना होते है। ख़ानदानी संगीतज्ञों में पहले रिवाज़ था कि लड़कियों की शादी में दहेज के रूप में उस खानदान की संगीत की चीजें भी दी जाती थी। बहुधा ये राग ओर बंदिशों के

रूप में होती थी। ख़ानदानी उस्ताद अपनी कृतियों के साथ अपने पूर्वजों की भी कृति सुनाते–सिखाते है, जो उन्हें पैतृक सम्पति के रूप में प्राप्त होती है। पटियाला घराने के ख़ानदानी संगीतज्ञ भारत के साथ–साथ पाकिस्तान में भी अपने घराने की शोभा बढ़ा रहे हैं। यही एक घराना है, जिसके कलाकार वर्तमान समय के दो देशों में इस घराने का नाम रौशन कर रहे है। पाकिस्तान के कलाकारों को पटियाला से बहुत प्यार है। पटियाला को संगीत का मक्का–मदीना मानते हैं।

पटियाला घराने के ख़ानदानी संगीतज्ञों की सूची निम्नलिखित है मियां निदो खां के पुत्र कालू खां हुए ओर मियां कालू खां के पुत्र नबी बख़्श और अली बख़्त (जरनैल) नवी बख़्श के पुत्र मियां जान खां और मियां अहमद जान खां मियां जान केपुत्र अता खां और गुल मोहम्मद और गुल मोहम्मद के पुत्र अब्दुल रहमान खां। मियां अहमद जान खां के चार पुत्र मुबारक अली, फाकुर अली, बाकर अली और इलियास हुसैन हुए। अली बख्त्रत (जरनैल) के पुत्र अख़्तर हुसन खां ओर अख़्तर हुसैन खां के दो पुत्र अमानत अली और फतेह अली। अमानत अली के पुत्र अमजद अली खां और असद अमानत अली खां। फतेह अली (करनैल) के पुत्र आशिक अली खां और आशिक अली खां साहब के शिष्य मियां अलादियां मेहरबान जो आशिक अली खां के माता के भाई थे। उस्ताद फ़तेह अली खां साहब के खास शिष्यों में काले खां कसूरी ओर अली बख़्श कसूरी प्रसिद्ध गायक हुए। मियां आली बख़्स कसूरी बड़े गुलाम अली खां के पिता तथा काले खां कसूरी के सगे भाई थे। उस्ताद फतेह अली खां साहब (करनैल) के पुत्र आशिक अली खां साहब ने भी संगीत की शिक्षा प्राप्त की और आशिक अलीं खां साहब से बड़े गुलाम अली खां साहब ने भी संगीत की शिक्षा पाई उनके चार पुत्र उ. बड़े गुलाम अली खाँ, बरकत अली खां, उ.मुबारक अली खां और उ. अमान अली खां थें बड़े गुलाम अली खां साहब के पुत्र करामत अली खां और मुनव्वर अलीं खां थे, और करामत अलीं खां के पुत्र जो पटियाला घराने के खास चश्मे चिराग है उ. मज़हर अंली खां और उस्ताद जबाद अली खां है। मनुव्वर अलीं खां के दो पुत्र रज़ा अली खां और शरीर अली खां है।

विभाजन के बाद पटियाला घराने का प्रचार पाकिस्तान में भी वर्तमान समय में बहुत हो रहा है। पाकिस्तान में शास्त्रीय संगीत के साथ घरानेदार संगीत वहां के लोकरूचि के अनुसार शास्त्रीय संगीत तो गाते है परन्तु उसके साथ ग़ज़ल विशेष रूप से गाते है, जो विश्व प्रसिद्ध है। कुछ नई पीढ़ी के संगीतज्ञ पॉप संगीत गाने में भी परहेज नहीं करते। पाकिस्तान के प्रसिद्ध गायकों के इस प्रकार है– उस्ताद फतेह अली खां, उस्ताद हामिद

अली खां, सुल्तान अली खां, नयाब, वाली और इनाम जो कि पॉप सिंगर हैं के नाम से प्रसिद्ध है, यह सभी कलाकार फतेह अली खां साहब के खानदान से है।

प्रसिद्ध गज़ल गायक गुलाम अली खां, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां साहब के शिष्य है। पटियाला घराने के शिष्य–प्रशिष्य और इस घराने के संबंध रखने वाले अन्य बहुत से कलाकार है, जिनमें से कुछ के नाम उल्लेखनीय है– पं. अजोय चक्रवर्ती, पं. जगदीश प्रसाद, जौहर अली, कौशिकी चक्रवर्ती, श्रीमती लक्ष्मी शंकर, श्रीमती निर्मला देवी, पं. प्रासून बैनर्जी, मीरा बैनर्जी, श्रीमती संजुकता घोश, अफगानिस्तन के मोहम्मद हुसैन साराहंग आदि। पटियाला घराने के खानदानी गायकों की सूची तानसेन के वंशज की तरह ही बहुत लंबी है। इनके शिष्य–प्रशिष्य और इनमे संबंधित कलाकारों की सूची इतनी अधिक हे कि सबका विवरण देना संभव नहीं है।

सारांशत पटियाला घराने के मियां दित्ते खां (जो कि शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत दोनों के निपुण गायक थे) से लेकर वर्तमान काल तक इस घराने के संगीतज्ञ, शास्त्रीय संगीत के साथ उपशास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत आदि विधाओं को अपनाते चले आ रहे हैं इस घराने में अनेक गायक तो हुए है साथ ही रबाबी, कीर्तनकार भी हुए। सारंगी भी इस घराने में खूब बजी। अब हारमोनियम भी खूब बज रहा है। पटियाला घराना ही एक ऐसा घराना है जो वर्तमान में दो देशों अतः हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के कलाकार इस घराने का नाम विश्व में प्रसिद्ध कर रहे हैं। इस घराने में गायन में युगलबंदी प्रारम्भ से ही परम्परागत चली आ रही है। पटियाला घराने की गयाकी बेडार अंग, खटका, मुर्की जमजमा तैयार तानों और सपाट तान से सुसज्जित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संगीत के घरानों की चर्चा, डा. सुशील कुमार चौबे, पृ0 21
संगीत–घराना अंक, कु. अल्का आश्टीकर, पृ. 47
भारतीय कंठ ओर वाद्य संगीत, डा. अरूण मिश्रा, पृ. 142–143
पंजाब की संगीत परम्परा, गीता पैन्तल, पृ. 113
संगीत–बोध डा. शरच्चन्द्र परांजये, पृ. 190
पंजाब की संगीत परम्परा गीता पैन्तल, पृ. 114
वही' पृ. 115